तृतीय अध्याय

''रामदरश मिश्र के काव्य में युगीन जीवन''

तृतीय अध्याय

''रामदरश मिश्र के काव्य में युगीन जीवन''

प्रास्ताविक :

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध हैं। सामान्यत: जिस परिवेश से साहित्यकार का सम्बध होता है उस परिवेश के रहन-सहन, रूढ़ि-परंपरा, संस्कारों एवं विचारों का प्रभाव उनपर अवश्य पड़ता हैं। कोई भी साहित्य साहित्यकार के विचारों का प्रतिबिंब हैं। इसलिए साहित्य में देश-काल-वातावरण के अनुसार परिवर्तन आना स्वाभाविक है। साहित्यकार युग की बदलती स्थिति पहचान कर विकृत स्थिति कम करने के लिए रास्ता खोजता है। साहित्य के बारे में विचार व्यक्त करते हुए सुमित्रानन्दन पंत जी कहते है कि - ''साहित्य मानव जीवन की गंभीर व्याख्या हैं। उसमें मानव चेतना की उँची चोटियों का प्रकाश, मन की लम्बी-चौड़ी घाटियों का छायातप और जीवन की आकांक्षाओं का गहरा रहस्यपूर्ण अंधकार संचित है।''[1] इसप्रकार साहित्य विशिष्ट काल में युगीन जीवन से प्रभावित होता है। इसलिए युगीन जीवन क्या होता है यह ज्ञात होना भी आवश्यक है। जिससे रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित युगीन जीवन अध्ययन के लिए सहयोगी होगा।

3.1 युगीन जीवन से तात्पर्य :

उपर्युक्त शीर्षक में 'युग' और 'जीवन' दो महत्त्वपूर्ण शब्द हैं। 'युग' किसी विशिष्ट काल का बोध कराता है तो 'जीवन' विशिष्ट काल में विभिन्न परिस्थितियों से प्रभावित जीवन का बोध कराता हैं। विशिष्ट युग में विशिष्ट घटनाओं तथा प्रवृत्तियों की बहुलता रहती हैं। विशिष्ट युग के प्रमुख घटनाओं तथा प्रवृत्तियों का वर्णन युगीन जीवन के अंतर्गत आता है। हिंदी साहित्य में भी विभिन्न युगों का बोध हुआ हैं। जैसे- भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रेमचंद युग आदि। युगीन जीवन के अंतर्गत नवीनता, परिवर्तनशीलता, समसामायिकता, आधुनिकता, दिशा निर्देशन, इन तत्वों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता हैं।

3.2 युगीन जीवन के विविध पक्ष :

युगीन जीवन के अंतर्गत चार पक्ष बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहे हैं। उसके बिना साहित्य का अध्ययन तथा आकलन संभव नहीं है। किसी भी साहित्य के तह तक पहुँचने

के लिए वे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिसका साहित्यकार के साहित्य पर प्रभाव होता है वे हैं -

(1) सामाजिक पक्ष

(2) राजनीतिक पक्ष

(3) धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

(4) आर्थिक पक्ष

3.3 रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित युगीन जीवन :

कवि रामदरश मिश्र जी बहुमुखी, प्रतिभा-संपन्न साहित्यकार हैं। युग सापेक्ष दृष्टि, जन-जीवन की आशा-आकांक्षा, उनकी सभ्यता, संस्कृति तथा शाश्वत मूल्यों की युगीन जीवन के धरातल पर प्रतिष्ठा कराना रामदरश मिश्र जी का प्रमुख लक्ष्य रहा हैं। कवि का कहना है कि जन-जीवन का यथार्थ चित्रण साहित्य में आना अनिवार्य हैं इसलिए साहित्यकार को समाज का अंग बनकर जीना आवश्यक है। कवि की दृष्टि युग सापेक्ष है। मिश्र जी कहते है कि "..... यह जाहिर है कि युगीन जीवन दृष्टि नए युग की अपनी होती है। उसकी अपनी कुछ विशिष्टताएँ होती हैं। कुछ परंपरागत धाराएं। अत: हर सच्चा कवि पोषित को पोषित नहीं करता। युग चेतना का सापेक्षता में नया सृजन करता है।"[2] इसलिए रामदरश मिश्र के काव्य का अध्ययन करते समय स्वातंत्र्योत्तर बदलती परिस्थितियों के विविध पक्षों को देखना आवश्यक है। क्योंकि दोनों काव्य-संग्रहों पर स्वातंत्रोत्तर बदलती परिस्थितियों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इसे विभिन्न पक्षों के अंतर्गत देखा गया है।

3.3.1 सामाजिक पक्ष :-

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज जीवन में क्रांतिकारी बदल हुऐ। स्वतंत्रता पूर्व भारतीयों के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति यह सिर्फ एकही उद्देश्य रहा था। उसी वक्त समाज सुधार के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति आवश्यक थी। वह सपना 15 अगस्त, 1947 में पूरा हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति को लेकर लोगों के मन में बहुत सारी अपेक्षाएँ थीं। लोगों को विश्वास था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अपना जीवन सुखकर होगा। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में अनेक योजनाओं का कार्यान्वयन हुआ। समाज में समता लाने के लिए सन् 1950 में संविधान का निर्माण किया गया। जिससे समाज में व्याप्त जातियता के बंधन ढीले हुए। शिक्षा प्रसार के कारण समाज जागृति हुई। लोग अपने अधिकारों के

लिए झगड़ने लगे। शिक्षा प्रसार के कारण अधिकतर युवक नौकरी के लिए शहर की ओर ही जाने लगे। तथा शहरों में उद्योग के कारण वहाँ जनसंख्या बढ़ती रही। इसी कारण लोगो को वहाँ मिलनेवाली सुविधाओं का अभाव महसूस होने लगा। इसीकारण लोगों में एकाकीपन, घुटन, संत्रास आदि समस्याओं का जन्म हुआ। इसी में भ्रष्ट शासन व्यवस्था योजनाओं के कार्यान्वयन में असफल रही। परिणामस्वरूप अमीरी-गरीबी में अंतर बढ़ता गया और आम जनता की अधिकतर स्थिति जैसी की वैसी रही। इस बदलती स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों का प्रभाव मिश्र जी के दोनों काव्य-कृतियों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

3.3.1.1 अधिकार के प्रति सजगता :-

शिक्षा के कारण समाज में बदलाव आया। कवि मिश्र जी का परिवर्तन में विश्वास है। उनके काव्य में परिवर्तन संबंधी कई उदाहरण दृष्टिगत होते हैं। समता के अधिकार के कारण सामान्य आदमी भी अपने अधिकार के प्रति सचेत हुआ। वह अपने अन्याय के विरोध में झगड़ने लगा हैं। इन सभी परिस्थितियों के प्रति जो असजग रहा है उसे भी कवि ने अपने काव्य के माध्यम से सजग करने का प्रयास किया है। मिश्रजी की 'अजनबी ठण्डी हवाएँ', 'लाशों के बीच', 'डर' आदि कविताओं में तथा गजल क्रमांक 6, 15, 20, 21 तथा 41 में इसकी स्पष्ट झलक दिखाई देती है। इन्होंने 'अजनबी ठण्डी हवाएँ' कविता में परिस्थितिनुरूप वर्तन करने का संदेश दिया है तो 'लाशों के बीच' तथा 'फिर वही लोग' कविताओं में भ्रष्टाचार के प्रति सजगता, तथा 'डर' कविता में मिश्र जी ने क्रांति की ओर संकेत किया है। समाज में कृषक वर्ग सबसे बड़ा वर्ग है। उन्हें अशिक्षा तथा अज्ञान के कारण ठगाया जाता हैं। उन्हें भी उनके अधिकार के प्रति सजग करते हुए मिश्र जी कहते है -

"हाथ कुछ आया न, तू फसलें उगाता रह गया
चर गये पशु खेत, तू पंछी उड़ाता रहा गया।"[3]

उक्त शेर कृषि जीवन पर आधारित है। देश में कृषकों का सबसे बड़ा वर्ग होकर भी वह असंघटित होने के कारण वह अपने अधिकारों को प्राप्त नहीं कर सका। इसलिए एक अन्य शेर में मिश्र जी कहते हैं -

"निकली है सुबह न्हाके आँख मल के देखिये
बैठे हुए हैं आप, जरा चल के देखिए।"[4]

इसप्रकार मिश्र जी ने अपने काव्य के माध्यम से कृषकों को तथा अन्य सभी लोगों को अपने अधिकार के प्रति सजग करने का प्रयास किया है।

3.3.1.2 व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना :-

भारतीय संविधान ने हमें व्यक्ति-स्वातंत्र्य की हमी दी है। लेकिन समाज में ऐसे भी लोग हैं जो अवांछनीय जीवन जीने के लिए विवश है। वर्तमान स्थिति में स्वार्थ-लिप्त मानवी जीवन के कारण व्यक्ति-चेतना सोयी नजर आती है। उसे जगाने का कार्य कवि रामदरश मिश्र जी अपने काव्य के माध्यम से करते हैं। मिश्र जी अपने गजल क्रमांक 7 में कहते है -

" सुबह ये कैसी ? रात के बदन की बू तो नहीं ?
पड़ा है कौन सड़क पर मरा-सा, तू तो नहीं ?"[5]

मिश्र जी के ग़ज़लों का प्रत्येक शेर अपना स्वतंत्र अर्थ देने में सक्षम हैं। यहाँ स्वतंत्र भारत में भी आदमी की स्थिति सड़क पर मर पड़े जानवर की तरह हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्ति स्वतंत्र होकर भी लाचार जीवन जीने के लिए विवश है।

3.3.1.3 गुलामी के प्रति विद्रोह :-

कवि रामदरश जी प्रगतिशील कवि हैं। वे सदैव यथार्थ पर उँगली उठाते रहे हैं। वे गुलामी बर्दाश्त नहीं करते। आज के समाज की वही हालत है। लोग गुलामीं के विरोध में आवाज उठा रहे हैं। मिश्र जी के काव्य में गुलामी के प्रति विद्रोही भावना का स्वर रहा हैं। शासन कौन-सा भी हो उन्हें भ्रष्टाचार ने जकड़ लिया है। जिसके कारण समाज अपाहिज बन गया है। इसलिए मिश्र जी अपनी 'कलम' कविता मे विद्रोही स्वर उठाता हैं। उनका कवि मन किसी व्यवस्था की चापलूसी नही करता वह आक्रमक और विद्रोही हो उठता है -

" हमारे हाथ में सोने की नहीं
सरकंडे की कलम है।

सरकंडे की कलम
खूबसूरत नहीं, सही लिखती हैं"[6]

इससे कवि की प्रगतिशीलता स्पष्ट दृष्टिगत होती है। प्रगतिशील कवि परिस्थिति और साहित्य के बीच कोई पर्दा नहीं रखतें। मिश्र जी भी अपनी बात स्पष्ट शब्दों में कहने को हिचकिचाते नहीं है।

3.3.1.4 सामंती मानसिकता का विरोध :-

शुरू से ही मिश्र जी सामंती मानसिकता के विरोधी रहे हैं। विद्वानों का

कहना है कि थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। आज समाज में वही हाल नजर आ रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात कल-कारखानदार श्रमिकों के बल पर पूँजी इकट्ठा करते रहें। दिन-रात श्रम करके भी श्रमिकों को उनके श्रम का पूरा लाभ नहीं मिला। पूँजीपति कारखानों में काम करनेवाले श्रमिकों का शोषण तथा अत्याचार करते रहें। जैसे की राजा-महाराजाओं के काल में होता था। वर्तमान काल में सरकारी योजनाओं का लाभ सिर्फ अमीरों को ही होता हुआ दिखाई देता है। वे अपनी पूँजी के बल पर आम आदमी को लुटते रहें और उसका शोषण भी करते हैं। मिश्र जी की 'नदी बहती है', 'फिर वही लोग' आदि कविताओं में सामंती मानसिकता का चित्रण मिलता है। मिश्र जी अपनी कविता में कहते हैं कि -

"दिन-दहाड़े उल्लू बोलते हैं, आदमी चुप है,
खाईयों और गुफाओं में उजाला है

मैदानों में अँधेरा घूप है
बड़े खेत छोटे खेतों को खा रहे हैं बीन-बीन"[7]

इसप्रकार समाज में सामंती मानसिकता चरम-सीमा पर पहुँच गई है। उनमें अमीर, जमींदार, उद्योगपति आते हैं उनकी मनोदशा का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है।

3.3.1.5 झूठी शान-शौकत :-

मिश्र जी झूठी शान-शौकत के विरोधी रहे हैं। उनके जीवन में कृत्रिमता को बिल्कुल स्थान नहीं है। आज के भौतिकवादी युग में लोक झूठी शान के लिए मर रह हैं। जिसके कारण उनका पैर बरबादी की ओर मुड़ रहे हैं। रामदरश जी 'होने, न होने के बीच' कविता में झूठी शान के लिए सहनी पड़नेवाली तकलिफों का वर्णन किया हैं तथा उनकी गजल क्रमांक 1 एवं 7 में झूठी शान-शौकत सम्बन्धी चित्रण हैं। वे कहते है -

"बाजार को निकलें हैं लोग बेच के घर को
क्या हो गया है जाने आज मेरे शहर को"[8]

उपर्युक्त शेर में कवि ने बाजारवादी संस्कृति का बढ़ता आकर्षण और सस्ती शान शौकत की ओर संकेत किया हैं।

3.3.1.6 असंघटितता :-

संघटित समाज में असीम शक्ति होती है लेकिन वर्तमान समाज असंघटित

होने के कारण वह क्षीण हो गया है। उसे व्यवस्था ने अंदर से खोखला बनाया है। कवि इस स्थिति के बारे में चिंतीत हैं। उनकी कई कविताओं में इस बात का जिक्र आया हैं। 'गलियाँ और सड़के' कविता में आम जनता के दुख का वर्णन करते हुए कवि कहता हैं -

"एक गली .... दो गली ...
गलियाँ ही गलियाँ
जब जब इन्हें देखता हूँ
अपने को बेहद दुखने लगता हूँ
और मेरी आवाज
(जो किसी तक पहुँचे बिन ही
गुब्बारे-सी फट जाती है)
पूछती है : कब तक ये गलियाँ
अलग-अलग बँटी हुई
ऐसी ही सहती रहेंगी होने की पीड़ा"[9]

इस प्रकार समाज के असंघटित रूप का भी चित्रण उनके काव्य में स्पष्ट रूप से मिलता हैं।

3.3.1.7 प्रकृति-चित्रण :-

प्राचीन काल से ही प्रकृति काव्य का प्रमुख आधार रही हैं। हर काल में थोडे बहुत परिवर्तन के साथ चित्रण हुआ ही हैं। मिश्र जी के दोनों काव्य-संग्रहों में भी प्रकृति का प्रचूर मात्रा में चित्रण मिलता हैं। मिश्र जी ने युगानुरूप प्रकृति-चित्रण करने का प्रयास किया है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ हेतू प्रकृति में आवश्यकता से अधिक हेरफार करने कारण अनेक समस्याएँ निर्माण हुई है। परिणामत: पर्यावरण को हानी पहुँचने के कारण प्रदुषण से मनुष्य बिमारियों की शिकार होता जा रहा हैं। इसी बात को लेकर मिश्र जी चिंतीत है। इसलिए वे धरती को बचाने के लिए अपनी कविताओं के माध्यम से आवाज उठाते हैं। उनकी 'चिड़िया', 'धूप', 'जंगल' आदि कविताओं के माध्यम से उनका प्रकृति-प्रेम दृष्टिगत होता है। मानवी निष्ठुर प्रवृत्ति के कारण जंगल नष्ट होते जा रहे हैं।

इसी कारण अकाल की समस्या निर्माण हुई। इसका चित्रण मिश्र जी ने 'बरसात गयी' कविता में किया है। कवि की प्रकृति देहाती होने के कारण शहर में रहते हुए भी उन्हें गाँव तथा गाँव के जंगल की याद आती है। वे कहते है -

" कहाँ है वह जंगल ?
तब ऐसा क्यों लगता है
कि जंगल में जो जलती आग छोड़ गया था
वह रात के सन्नाटे में जल-जल उठती है
और पूरा का पूरा जलता हुआ जंगल
मुझमें से गुज़रने लगता है !"[10]

इस प्रकार मिश्र की अन्य कविता तथा गज़लें है जो प्रकृति के माध्यम से वर्तमान माहोल को प्रकट करती है।

3.3.1.8 मातृभूमि के प्रति प्रेम :

भारत की जनता अपनी मातृभूमि पर असीम प्यार करती हैं। कवि मिश्र जी का भी मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम रहा हैं। इसके बारे में डॉ. फूलबदन यादव लिखते है कि, - " मातृभूमि के प्रति कवि का आकर्षण राष्ट्र-प्रेम ही है। मातृभूमि मे उसके आत्मीयता का भाव उपलब्ध होता है। जो शहर के चमक-दमक के बीच दुर्लभ है।"[11] कवि ने 'दवा की तलाश', 'लौट आया हूँ मेरे देश' आदि कविताओं के माध्यम से अपना मातृभूमि के प्रति प्रेम प्रकट किया हैं। सिर्फ कवि को ही नहीं देश के हर-एक नागरिक को अपनी जन्मभूमि से प्यार होता है। मिश्र जी मातृभूमि के प्रति अपनापन व्यक्त करते हुए कहते हैं -

" ये हाँफते हुए गड्ढे
ये काइयों भरे ताल ...

ये टूटे हुए कुएँ ...
ये सब मेरे है"[12]

3.3.1.9 कृषि जीवन :

समाज व्यवस्था में किसान का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा है। वही महत्त्वपूर्ण घटक कई बार साहित्यकारों से भी दुर्लक्षित रहता है। मिश्र जी की सूक्ष्म दृष्टि उसे वंचित नहीं रहने देती। किसान के दुखों का वर्णन करते हुए कहते है कि, किसान सबका पालनकर्ता होकर भी आज वह भूखा है। कभी बाढ़ की तो कभी लूटमार का आतंक उन्हें सहना पड़ता है। फिर भी वह नियति का खेल समझकर चुप रहता है और हँसी-खुशी में गाते-गाते धरती में बीज-बोता हैं। मिश्र जी ने यहाँ 'किसान-गीत' में उनके

दु:ख का वर्णन किया है। किसान कहता हैं -

“गाढ़े गए दिन बीत रे, बैला बाँएँ से-औं औं !
माँ का हरा कचनार मन मुरझाया हुआ है
धूआँ चिता का ताल में अभी छाया हुआ है
पर न नई यह रीति रे, बैला बाँएँ से-औं औं !”[13]

देश का किसान मेहनती होकर भी उसे ठगाया जाता है। दिन-रात मेहनत करके भी उसके हाथ कुछ नहीं आता। इसलिए मिश्र जी गज़ल के एक शेर में कहते हैं -

“हाथ कुछ आया न, तू फसले उगाता रहा गया
चर गये पशु खेत, तू पंछी उड़ाता रहा गया”[14]

इसप्रकार स्वातंत्र्योत्तर काल में कृषि की स्थिति बहुत बिकट होती नजर आती हैं। इसी व्यवसाय पर निर्भर किसान आज ठोकरे खातें-खातें संघर्षमय, दु:खद और पीड़ित जीवन जी रहा है।

3.3.1.10 प्रेम-चित्रण :

साहित्य तथा समाज में प्रेम महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। उर्दू-फारसी में तो गज़ल प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त साधन रहा है। मिश्र जी के भी काव्य में प्रेमाभिव्यक्ति संबंधी सशक्त चित्रण मिलता है। परंतु उनके प्रेम-चित्रण में नैतिकता का चित्रण परिलक्षित होता है। उम्र के हिसाब से युवक-युवतियों के मन में प्रेम-भावना जागृत होना सहज है। प्रेम में छिप-छिप के मिलना, एक-दूसरे के लिए तड़पना आदि बातें आती ही हैं। परंतु नगरों में प्रेम ने विकृत रूप धारण किया है। असली प्यार खत्म होता जा रहा है। प्यार में व्यावहारिकता आ गयी है। इसे स्पष्ट करते हुए मिश्र जी कहते है -

“शरीर पर लुट रहे है देश
आत्मा बीक रही है पैसे की तीन”[15]

मिश्र जी की गजलों में संयमित प्रेम-चित्रण मिलता है। उनकी ज्यादातर गज़लों में संयम ही दिखाई देता है। मिश्र जी उसका चित्रण करते हुए लिखते हैं -

“ तू लौट गया आके मेरे घर के सामने
वरना न कोई सर था मेरे सर के सामने”[16]

उनकी अन्य गज़लों तथा कविताओं में भी प्रेम-चित्रण मिलता हैं। उनकी गजल क्रमांक 10, 11, 30 आदि गज़लें तथा ‘एक नीम मंजरी’, ‘रात-रात भर मोरा

पिहँके', 'बादल घेर-घेर मत बरस' आदि कविताओं में भी प्रेम की विभिन्न दशाओं का चित्रण मिलता हैं।

निष्कर्षत: कवि रामदरश मिश्र जी को अपने काव्य में सामाजिक जीवन को पूर्ण रूप से समेटने में सफलता मिली है।

3.3.2 राजनीतिक पक्ष :

आधुनिक युग में सबसे अधिक समाज जीवन को राजनीति ने प्रभावित किया है। राजनीति देश की प्रगति का एक सबसे बड़ा साधन है। देश की उन्नति राजनीतिक स्वस्थता पर ही निर्भर होती है। जिस राष्ट्र की राजनीति राष्ट्रहित के लिए हानीकारक होती है उस समाज का विकास अवरुध्द होता है। परिणामस्वरुप राष्ट्र पतन की ओर बढ़ता है। देशहित के बारे में गांधीजी के राजनीतिक विचार बहुत महत्त्वपूर्ण थें। उसे उद्धृत करते हुए डॉ. लाल साहब सिंह कहते है कि " स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के कार्यक्रमों की रूप-रेखा बनाते समय उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू को सलाह दी थी कि सभी कांग्रेसियों के लिए एक आचार-संहिता बना दी जाए। जिसके अनुसार सभी स्वतंत्रता सेनानी-कांग्रेसजन सत्ता से सदैव के लिए पृथक रहने की शपथ ले और राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में अपने अनुभव का सामाजिक योगदान दें।"[17] लेकिन कांग्रेस नेताओं ने उनकी सलाह नहीं मानी नतीजा यह हुआ कि, राजनीति गलत दिशा कि ओर मुड़ गयी। स्वतंत्रता के पश्चात अनेक राजनीतिक पार्टियों का निर्माण हुआ। धर्म राजनीति का प्रमुख साधन बन गया। समाज में विकृत राजनीति पनपने लगी। भ्रष्ट राजनेताओंने देश को खोखला बनाया। इन सभी के बीच आम जनता पीसती जा रही हैं। परिणामत: मिश्र जी जैसा कवि इस युग के राजनीतिक प्रभाव से दूर नहीं रह सकते। उन्होंने राजनीति के विभिन्न पहलुओं पर बड़ी सफलता से प्रकाश डाला हैं।

3.3.2.1 चुनाव :

राजनीति में चुनाव एक जंग है। उसी पर ही राजनेताओं का भविष्य निर्भर होता है। अपनी जीत के लिए वे प्राणों की बाजी लगाते हैं। चुनाव में वे अलग-अलग साधनों का प्रयोग करते हैं। चुनाव की बदलती स्थिति को चित्रित करते हुए डॉ. लाल साहब सिंह लिखते हैं कि, - " चुनाव में धर्म, जाति और धन का महत्व बढ़ गया है। देश की मूल समस्याएँ, सामाजिक उत्थान, राष्ट्रीय एकता, अर्थिक विकास, औद्योगिक उन्नति आदि पर सम्यक ध्यान नहीं दिया गया।"[18] रामदरश मिश्र जी के काव्य में इन सारी

बातों का सजीव चित्रण मिलता है। राजनीति में कुर्सी को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। उसे स्थिर रखने के लिए नेता लोग कभी धन का तो कभी गुंडागर्दी का सहारा लेते हैं। इस बात को अपने काव्य में अंकित करते हुए मिश्र जी कहते है -

''लगता है आज फिर कुछ होगा
फिर किसी कुर्सी के हिलते हुए पाये को

मजबूत करने के लिए
धूप का एक टूकड़ा वहाँ दफनाया जायेगा''[19]

चुनाव में लोग नेताओं को वोट देते हैं। हमनें वोट देकर चुना हुआ प्रतिनिधि गलत निकलने पर हम ही गलत ठहरते हैं। चुनाव जीतने के बाद यही नेता लोग जनता की सेवा करने के बजाय स्वयं अपने लिए मेवा इकट्ठा करने में जुड़ जाते है। इस पर जनता पश्चात्ताप व्यक्त करती हैं। मिश्र जी जनता की चुनाव में होनेवाली गलती की ओर प्रतिकात्मक संकेत करते हुए हैं -

'' खेतों, ताल-तलैयों में छलकती जाती पानी है
लुटा रही खुद को देखो नदिया कैसी दीवानी हैं''[20]

यहाँ 'नदियाँ' आम जनता का प्रतीक हैं। इसप्रकार मिश्र जी के काव्य तथा गज़लों में चुनाव संबंधी अपनाये जानेवाले अनेक हथकंडों का चित्रण मिलता हैं।

3.3.2.2 स्वार्थी एवं भ्रष्ट राजनीतिज्ञ :

किसी भी देश का विकास उस देश के नेताओं के चारित्रिक गुणों पर निर्भर होता हैं। राजनीति में नेताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हैं। नेताओं ने ही वर्तमान राजनीति को आज भ्रष्ट बनाया हैं। पहले नेताओं के नाम किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए सामने आते थें। परंतु आज हथकंडों वर्तमान युग में वे किसी हथकंडों से संबंधित जुड़े नजर आते हैं। उनकी स्वार्थी वृत्ति तथा भ्रष्टाचार के कारण देश का विकास अवरुध्द हुआ है। इसका स्पष्ट चित्रण मिश्र जी के 'केन्द्र और परिधि', 'जुलूस', 'साक्षात्कार', 'होने, न होने के बीच' आदि कविताओं तथा गजल क्रमांक 15 और 18 में मिलता है। इसके माध्यम से भ्रष्ट राजनीति पर कवि ने व्यंग्य किया है। मिश्र जी अपनी गज़ल में कहते है -

'' रोशनी में बड़ा अँधेरा है
आज यह कौन सा सवेरा है

रात भर साथ हम चले जिसके
दिन में देखा कि वह लुटेरा है''[21]

उक्त ग़ज़ल के शेर में 'रोशनी' तथा 'सवेरा' स्वतंत्रता का प्रतीक है। ग़ज़ल के दूसरे शेर में 'रात' पारतंत्र्य का प्रतीक है। मिश्र *जी कहना चाहते है कि लोगों ने जिन नेताओं को पारतंत्र में साथ दी उनमें से कुछ नेता स्वार्थी निकले। उन्होंने लोगों को लुट लिया। देश सेवा के नाम पर लोगों का विश्वासघात किया। आज तो नेताओं ने मानापमान को ही त्याग दिया है। राजनीतिक दलों में सामील होने पर उनके स्वाभिमान को वहाँ कुचल दिया जाता है। राजनीतिक लालसा तथा स्वार्थी वृत्ति के कारण उन्हें बड़े नेताओं से चुप कराया जाता हैं। इस हालत का चित्रण करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

"दल के अन्धभक्तों की तरह
और 'मैं' के नीचे कुचला 'मैं'
तड़पता रहता है भीड़ में खोये किसी एकान्त के लिए"[22]

3.3.2.3 राजनीति का विकृत चेहरा :

वर्तमान राजनीति का नीति से संबंध टूट गया है। राजनीतिक लोगों के लिए आज भारत कृषि-प्रधान नहीं तो कुर्सी प्रधान देश बन गया है। राजनीति में दलबदली प्रवृति के कारण पक्षनिष्ठा खत्म होती जा रही है। जैसे की राजनीति ने विकृत रूप धारण किया है। इन सारी विकृत और विद्रुपताओं का चित्रण रामदरश मिश्र जी के काव्य में मिलता है। उनकी 'जुलूस', 'साक्षात्कार', 'राजधानी एक्सप्रेस', 'डर', 'चूहे', तथा 'केन्द्र और परिधि' आदि उल्लेखनीय कविताएँ हैं। जिसमें विकृत राजनीति का चित्रण मिलता है। राजनीतिक विद्रूपताओं का चित्रण गज़ल क्रमांक 4, 12, 13 तथा 15 में भी प्रभावी ढंग से मिलता है। राजनीतिज्ञों की विकृत प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए मिश्र जी कहते है कि, -

"वे जा रहे तो कहीं रास्ता रूका होगा
वे उठ रहे हैं तो कोई कहीं झुका होगा"[23]

मिश्र जी की 'जुलूस' कविता में अन्यायी राजनीति का चित्रण मिलता है। सामान्य जनता को जबरदस्ती से जुलूस में शामील किया जाता है। जिसका जुलूस के साथ कोई रिश्ता नहीं होता। इसप्रकार कवि ने स्पष्ट रूप से राजनीति विकृत चेहरे का वर्णन किया है।

3.3.2.4 साहित्यिक राजनीति :

'राजनीति' शब्द सिर्फ राजकीय क्षेत्र से संबंधित न रहकर वह विस्तृत अर्थ

में फैल गया है। वर्तमान युग में राजनीति ने हर-एक क्षेत्र में प्रवेश किया है। साहित्यिक क्षेत्र भी इससे बुरी तरह प्रभावित है। बड़े-बड़े प्रतिभा-संपन्न साहित्यकारों पर होनेवाले अन्याय साहित्यिक राजनीति का ही परिणाम है। साहित्यिक क्षेत्र में चल रही राजनीतिक विचार धारा से संबंधित जो साहित्यकार नहीं जुड़ जाता उन पर अवश्य अन्याय होता है। आलोचक तथा पुरस्कार और सम्मानों से पुरस्कृत करनेवाली संस्थाएँ भी उनपर अन्याय करती हैं क्योंकि पुरस्कार देनेवाली संस्था से दल के लोग जुड़े रहते हैं। वे अपने दल का आदमी खोजते रहते है और उन्हें ही सराहते हैं। जिससे असली प्रतिभा दब जाती है। यहाँ 'गधे को घोड़ा' कहा जाता है। इस साहित्यिक राज़नीति के बारे में डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का स्पष्ट मत है कि - "वर्तमान काल वादों का काल है। समीक्षा भी वादों के जंगल में अटकने लगी है और साहित्यिक अनुसंधान भी। जैसे - आदर्शवाद, यथार्थवाद, समाजवाद, व्यक्तिवाद, अस्तित्ववाद, यौनवाद आदि ... आदि ....। किन्तु वादों के संदर्भ में जब रचना का विवेचन किया जाता है तब उसकी असली तस्वीर धुंधली हो जाती। ऐसी हालत में मौलिक रचना के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण से समकालिक प्रश्नों को उठाना समीक्षक का बहुत बड़ा दायित्व होता है।"[24] प्रतिभा संपन्न कवि रामरश जी स्वयं इस राजनीति के शिकार हुए है। जिसके कारण उन्हें अनेक अन्यायों को सहना पड़ा है। कई गज़लों तथा कविताओं के माध्यम से साहित्यिक राजनीति स्पष्ट होती है। इस दृष्टि से उनकी 'सेमल', 'कलम', 'फिर वही लोग', 'होने, न होने के बीच', 'बन्द कर लो द्वार' आदि कविताएँ तथा गज़ल क्रमांक 14, 17, 34, 35, 50, 53 आदि गज़ले उल्लेखनीय हैं। 'सेमल' कविता में मिश्र जी कहते हैं -

" अब इसमें मेरा क्या कसूर
कि मेरे सर्वस्व समर्पण को भी
तुम गंध नहीं दे सके
और औरों का अधूरा समर्पण भी
तुम्हारी दी हुई साँस से महकता रहा"[25]

इसप्रकार रामदरश मिश्र जी ने वर्तमान राजनीति पर पैनी दृष्टि डाली है। उन्होंने समग्र राजनीतिक वास्तविकताओं को जनता के सामने पेश करने का प्रयास किया हैं। इस राजनीतिक परिस्थितियों से लोगों को सचेत कर परिवर्तन की कामना की है।

3.3.3 धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष :

भारतीय संस्कृति में धर्म को महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से ही धर्म को उदात्त रूप में ग्रहण किया है। धर्म मानवता का प्रतीक है। लेकिन वर्तमान युग में उदात्त रूप नष्ट होता जा रहा है। समाज के ठेकेदारों ने उसे विकृत बनाया हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में भी भारतीयों के मन पर धर्म का प्रभाव रहा है परंतु उसका स्वरूप विकृत है। आज भी धर्म के नाम पर धार्मिक अनाचार होते ही हैं। धर्म ने समाज मे सांप्रदायिकता फैलाने का कार्य किया हैं। जिसके कारण मासूम लोगों की जान को खतरा निर्माण हुआ हैं। देश विभाजन का प्रमुख कारण धर्म ही है। वर्तमान समाज में धर्म जोड़ने का नहीं तो तोड़ने का कार्य कर रहा हैं। वे लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़काकर 'वोट' पाने का कार्य करते हैं। इसप्रकार वर्तमान धार्मिक स्थिति ने विकृत रूप धारण किया है।

दूसरी ओर संस्कृति की बात कहीं जाए तो भारतीय संस्कृति दुनिया में श्रेष्ठ समझी जाती है। संस्कृति का संबंध मानव मन की उदात्तता से है। डॉ. मधु खराटे संस्कृति के बारे में विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं, ''सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, त्याग, क्षमा, संयम, साधना, बंधु-भाव, जनकल्याण, सहयोग, परोपकार आदि भारतीय संस्कृति के सदैव उपकरण रहे हैं। अपनी इन तमाम विशेषताओं के कारण ही भारतीय संस्कृति विश्व की अन्य संस्कृतियों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती हैं। लेकिन वर्तमान काल में जीवन के अन्य क्षेत्रों में शीघ्रता से बढ़ती हुई विसंगतियों और विद्रूपताओं ने हमारे सांस्कृतिक जीवन को दूषित कर दिया है।''[26] वर्तमान की बदलती परिस्थिति तथा वैश्वीकरण के प्रभाव स्वरूप भारतीय संस्कृति में तीव्रता से बदलाव आ रहा हैं। इस यह बदलते स्वरूप चित्रण कवि मिश्र जी के काव्य में प्राप्त होते है। रामदरश मिश्र जी मानवतावादी रचनाकार हैं। उन्हें धर्म के बन्धन मान्य नहीं है। वे 'मानवता को ही सबसे श्रेष्ठ धर्म समझते हैं'। भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ तत्त्वों में उनका विश्वास हैं। उन्हें धर्म के नाम पर होनेवाली हिंसा मान्य नहीं हैं। इसी कारण धार्मिक तथा सांस्कृतिक विचार काव्य तथा गज़लों के माध्यम से व्यक्त होते हैं।

3.3.3.1 धर्म के नये मानदंड :

मिश्र जी के काव्य के माध्यम से धर्म के नये मानदंड के प्रति आस्था दिखाई देती है। उन्हें धर्म का जर्जर रूप मान्य नहीं है। वे धर्म की उदात्त रूप में स्थापना करना चाहते है। वे मानते है कि मानव ने मानव धर्म के बारे में प्रकृति से भी कुछ बातें सीखना

आवश्यक है। मिश्र जी प्रकृति के हवा, पानी, आकाश, आग आदि अंगों के माध्यम से धर्म को समझाने का प्रयास करते है। प्रकृति के विभिन्न अंग अपना सबकुछ दूसरों के लिए समर्पित करते हैं। प्रकृति धर्म के बारे में अपने विचार स्पष्ट करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

" मैंने सोचा
हम भी तो हवा, पानी, आकाश, आग और
धरती से बने हैं
लेकिन हमने उन्हें अलग-अलग धर्मों में बाँट दिया है
उन पर अपने-अपने नाम लिखकर
उनको उन्हीं से काट दिया है।"[27]

इस प्रकार रामदरश जी मानते है कि अगर प्रकृति ने मनुष्य की तरह संकुचित वृत्ति दिखाई तो मनुष्य को जीना भी मुश्किल होगा।

3.3.3.2 धार्मिकता प्रगति में बाधा :

आज समाज में देखा जाय तो सामान्य जनता ही धर्म में ज्यादा विश्वास रखती हैं। उनमें पाप-पुण्य तथा दूसरों के सुख में अपना सुख मानने की प्रवृत्ति आज भी विद्यमान है। लेकिन धार्मिकता और लोगों में भोलेपन के कारण उन्हें ठगाया जाता है। उन्हें धर्म की नशा में सुलाया जाता है। कवि ने भी इस बात को जान लिया है। वे लोगों को परिस्थिति के प्रति सज़ग करने की कोशिश करते हैं। वे कहते है, -

" दूसरों के ख्वाब अपना समझ सोते रहें
पड़ा होगा ढेर सारा काम, आओ घर चले"[28]

जनता के भोलेपन का फायदा उठाकर धोखेबाज लोग बड़े बनते हैं। जनता अपने किस्मत पर भरोसा कर जैसी-की-जैसी रहती है। इसका यथार्थ चित्रण मिश्र जी की 'बरसात गयी' कविता में भी आया है। अत: सिध्द है कि धर्म प्रगति का अवरोध है।

3.3.3.3 मानव धर्म :

मानवता मानव का मुख्य धर्म है। मिश्र जी सदा ही मानव धर्म के हिमायती रहे हैं। कई लोग कहते हैं कि समाज से मानवता लुप्त होती जा रही है लेकिन मिश्र जी का इस बात में विश्वास नहीं है। उनका 'आम आदमी' पर भरोसा है। उनमें मानवता आज भी विद्यमान है। मिश्र जी के उक्त कथन से बात और स्पष्ट हो जाती हैं। ओम निश्चल से हुई बातचीत में वे कहते हैं कि, " अगर आप मूल्य को खोजेंगे ऊँचे-ऊँचे लोगों के

संस्कारों में, तो नहीं दिखाई पड़ेगा। सारे के सारे ऊंचे नेता लोग, ऊँचे पूंजीपति लोग, ऊँचे शिक्षाशास्त्री लोग, यहां तक कि जो ऊँचे-ऊँचे अंतर्राष्ट्रीय महर्षि लोग मूल्य शून्य हैं, उनमें मूल्य नहीं बचा है, केवल मूल्यों का प्रवचन बचा हुआ है वहाँ पर। लेकिन जो आम आदमी है, सामान्य आदमी है, जो नहीं जानता कि मूल्य क्या चीज है, क्या चीज नहीं है, अभी संबंध वहां बचे हुए हैं, प्यार और करूणा और सहानुभूति बची हुई है।''[29] उनकी गज़ल क्रमांक 8, 13, 17 आदि गज़लों मे मानवता संबंधी चित्रण आया है। 'सृष्टि' कविता में भी मानव धर्म संबंधी चित्रण मिलता है। निम्न शेर में उनकी मानवता स्पष्ट होती है। वे कहते हैं कि -

'' दिखी कहीं भी आग सोई हवा दी मैंने
किसी की आँच से छत छुवा दी मैंने''[30]

3.3.3.4 सांप्रदायिकता :

धर्म के कारण ही समाज में सांप्रदायिकता फैलती है। मिश्र जी सांप्रदायिकता को समाज की प्रगति का सबसे बड़ा रोड़ा मानते है। समाज के नेता तथा ज्ञानी लोग स्वार्थवश समाज में सांप्रदायिकता की आग फैलाते हैं। जो धर्म का ज्ञान देते हैं वही धर्म-धर्म में विद्वेष फैलाने का कार्य करते हैं। मिश्र जी के काव्य में भी सांप्रदायिकता के प्रति तीव्र आक्रोश मिलता है। उनकी 'जुलूस' कविता में सांप्रदायिकता संबंधी चित्रण मिलता है -

'' जुलूस में एक उन्माद है
लोक नाच रहें हैं
विधर्मियों के नाश के नारे लगा रहे हैं।''[31]

गलत लोगों के हाथों में समाजव्यवस्था होने के कारण समाज में सांप्रदायिकता फैलती है। 'साक्षात्कार' कविता में भी इसका स्पष्ट चित्रण मिलता है -

'' हिजड़ो के हाथों में कामशास्त्र की पोथियाँ हैं
भेडियों के गले में टँगा है - वैष्णव संगीत
बन्दूकों पर पंचशील की मुहर।''[32]

3.3.3.5 नई सभ्यता और संस्कृति का उदय :

स्वतंत्रता के पश्चात औद्योगिक प्रगति के कारण देश की विभिन्न परिस्थितियों में बदलाव आया। लोग व्यवसाय हेतु गाँव से शहर की तरफ भागने लगे। शहरी संस्कृति ने ग्रामीण जनता को भी प्रभावन्वित किया। देहात से शहर आए लोग भी

शहरी लोगों की तरह व्यवहार करने लगे। इसी कारण शहरों में 'फ्लैट् संस्कृति' का उदय हुआ। जिसके कारण आदमी-आदमी से कटता गया। आदमी नई सभ्यता और संस्कृति में घुलमिल गया। डॉ. अमन सिंह वधान अपने 'साहित्य और सांस्कृतिक संकट' लेख में सभ्यता और संस्कृति के बारे में अपने विचार व्यक्त करते है - ''सभ्यता समाज की बाह्य व्यवस्थाओं का नाम है, जबकि संस्कृति व्यक्ति के आन्तरिक विकास का परिणाम है। सभ्यता की दृष्टि समकालीन जीवन की सुविधा-असुविधाओं में रहती है, जबकि संस्कृति भविष्य या अतीत के आदर्श पर[33] मिश्र जी अपने काव्य के माध्यम कहते है कि आदमी भौतिकवादी होने के कारण उन्हें कृत्रिम सभ्यता और संस्कृति ने जकड़ लिया है। मिश्र जी की इस दृष्टि से 'सड़क', 'सरोवर', 'आमने सामने मकान' आदि कविताएँ उल्लेखनीय हैं। वे नई सभ्यता और संस्कृति के कारण आये बदलाव को व्यक्त करते हुए 'आमने-सामने मकान' कविता में कवि कहते हैं -

'' आमने-सामने मकान
बीच में एक सड़क है
मकान रोज देखते है एक-दूसरे को
किन्तु सड़क पार नहीं करते
सड़क से गुजरते हैं लोग
जिन्हें न सड़क जानती है न मकान।[34]

उक्त काव्य पंक्तियों में मकान आदमी की बदलती मानसिकता का प्रतीक है। 'बीच की सड़क' आदमी आदमी में फैली दूरी का प्रतीक है। इसप्रकार युगीन विसंगतियों के कई उदाहरण मिश्र जी के काव्य में मिलते हैं।

3.3.3.6 पाश्चात्यों से प्रभावित संस्कृति :

कवि रामदरश मिश्र जी के काव्य में पाश्चात्यों से प्रभावित भारतीय संस्कृति का पर्याप्त मात्रा में चित्रण मिलता है। आज की बाजारवादी संस्कृति पाश्चात्यों की देन है। लोग अपनी औकात देखे बीना अपनी शानो-शौकत पूरी करते हैं। जिससे वे ज्यादा ही विपत्ति में फँसते हैं। इसके बारे में देश के बड़े बड़े विद्वान जन भी चिंतीत है। पश्चिमी संस्कृति के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. अमन सिंह वधान लिखते है कि, ''पश्चिमी वैचारिकता और उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे लिए शत्रु है। बहुत सुन्दर तालाब संगमरवर का हो, लेकिन उसमें पानी न हो तो वह हमारे लिए निरर्थक है।''[35]

कवि रामदरश मिश्र जी भी बाजारवादी संस्कृति से अपनी कविता में चीढ़ व्यक्त करते है -

"बाजार को निकलें हैं लोग बेच के घर को
क्या हो गया है जाने आज मेरे शहर को"[36]

इस प्रकार युगानुरूप बदलती सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का सूक्ष्म चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान युग में धार्मिकता के साथ-साथ आदमी के सांस्कृतिक जीवन में भी बदलाव आया है।

3.3.4 आर्थिक पक्ष :

आर्थिक स्थिति सभी परिस्थितियों को प्रभावित करनेवाला महत्त्वपूर्ण पक्ष है। आजादी के बाद समाज में अर्थ के आधार पर उच्च, मध्य तथा निम्न आदि वर्ग बने। दिनों-दिन देश में निर्धनता, बेकारी, महँगाई, तेजी से बढ़ती जा रही है। इससे निम्न वर्ग का हालत ज्यादा ही खराब होती जा रही है। आज हम देखते हैं सरकारी योजनाएँ तथा पंचवर्षीय योजनाएँ आम जनता की स्थिति सुधारने में पूर्णत: सफल नहीं हुई है। ऐसी ही हालत में आजादी के बाद ही पाकिस्तान तथा चीन इन पड़ोसी देशों से हुए युद्ध का खर्च तथा शरणार्थियों के पुनर्वास के खर्च का बोझ देश की तिजोरी पर पड़ा। भ्रष्टाचार तथा भ्रष्ट राजनीति के कारण देश की स्थिति और बिगड़ती गयी। नेताओं तथा पूँजीपतियों ने देश को लूट लिया। अधिकतर भूखी-नंगी साधनहीन जनता की ओर ध्यान नहीं दिया गया। स्वतंत्रता का लाभ सिर्फ चुनिंदा लोगों को ही हुआ। आजादी के बाद भी गरीब लोगों को विवश जीवन जीना पड़ रहा हैं। आजादी के पश्चात किसानों की स्थिति में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। आजादी के बाद भी देश में आर्थिक विषमता बनी ही रही। इन सभी परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण रामदरश मिश्र जी के काव्य में मिलता है।

3.3.4.1 अर्थ केंद्रित जीवन :

मनुष्य के जीवन में अर्थ को महत्त्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान जीवन में अर्थ जीवन का साधन है लेकिन अर्थ जीवन का साध्य बन गया है। अर्थ केंद्रित जीवन के कारण बौध्दिकता को गौण स्थान दिया जा रहा है। अर्थ ने संपूर्ण मानवी जीवन को ही प्रभावित किया है। रिश्तों में दरार इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। इन सारी बातों का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य तथा गज़लों में मिलता है। इस संबंध में उनकी गज़ल क्रमांक 1, 2, 7, 8 तथा 14 आदि गज़लें उल्लेखनीय हैं। जब आदमी के पास पैसा नहीं होता तो उसे समाज में कोई स्थान नहीं दिया जाता। इस विषय का वर्णन करते हुए मिश्र जी

कहते है -

" खबर मुझे भी नहीं, मुझको नशा है कोई
मेरे भीतर जमीन की महक सा है कोई

फटी जेबों में हाथ डाले हुए गाने लगा
कहीं मजबूरियों में खिलके हँसा है कोई"[37]

मिश्र जी के 'गठरी', 'राजधानी एक्सप्रेस', 'दिन' तथा 'फरवरी' आदि कविताओं में भी अर्थ केंद्रित जिंदगी का चित्रण हुआ है। आदमी पैसों के कारण दिन-रात मशीनों के साथ जूझ रहा है। अर्थ को प्रधानता देने के कारण आदमी की मानवता लुप्त होती जा रही है। आदमी प्रकृति से भी अलग होता जा रहा है। इसका दुख अपनी कविता में मिश्र जी व्यक्त करते है, -

" आदमी आदमी होकर भी भूल गया है
फरवरी और जून में फर्क करने की तमीज़"[38]

इस प्रकार मिश्र जी के काव्य में अर्थ केंद्रित जिंदगी का चित्रण मिलता है।

3.3.4.2 मजदूरों का यथार्थ जीवन :

रामदरश मिश्र जी के काव्य में अर्थार्जन हेतु कठोर श्रम करनेवाले मजदूरों के जवीन का यथार्थ चित्रण मिलता है। उद्‌योगपतियों द्‌वारा मजदूरों का निर्ममता से शोषण किया जाता है। उनको काम का दाम इतना कम दिया जाता है कि वे दो जून की रोटी भी नही जुटा पाते। मिश्र जी की 'हम पूरब से आये है', 'दवा की तलाश', 'जुंलूस', 'गठरी', 'फिर वही लोग' आदि कविताओं में इसका यथार्थ चित्रण मिलता हैं। वे अपनी 'हम पूरब से आये है' कविता में इस कठोर श्रम करनेवाले मजदूरों के जीवन का यथार्थ वर्णन करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

" फटी फटी आँखों में लादे भूख डरानी,
बैठें होंगे खाली घर के सभी परानी,
लेकर सबका दर्द आपकी नगरी में भरमाये हैं
हल थे जोतते, करते थे बेगारी
यहाँ खींचते रिक्शा, ढोते पत्थर भारी"[39]

इस प्रकार मिश्र जी की अन्य कविताओं में भी इसका यथार्थ चित्रण हुआ है। अर्थाजन हेतु गाँव से नगरों तक पहुँचे मजदूर आज भी उपेक्षित जीवन यापन कर रहा है।

3.3.4.3 अवैध रास्ते से धन प्राप्ति :

वर्तमान युग में कम समय में अमीर बनने की होड़-सी लगी है। इसलिए लोग अवैध मार्ग स्वीकारने को भी आगे-पीछे नहीं देखते। इससे भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी तथा गुंडागर्दी को बढ़ावा मिल रहा है। अवैध मार्ग से कमाया हुआ पैसा जनता की विकास में नही लगाया जाता। परिणामस्वरुप देश का विकास पीछे रह जाता है। मिश्र जी की 'साक्षात्कार', 'गठरी', फिर वही लोग' आदि कविताओं में तथा कई गज़लों में इसका यथार्थ चित्रण मिलता हैं। जिसमें धन कमाने के लिए अवैध रास्ते अपनाए जाते हैं। फिर भी आम आदमी इससे सावधान नहीं होता हैं। इसकी चिंता मिश्र जी व्यक्त करते हुए कहते हैं -

" जल गया घर ये किसका जादू है
कोई शोला न है धुआँ यारो"[40]

इस अवैध रास्ते के कारण किसी भी योजना का कार्यान्वयन व्यवस्थित रूप से नहीं होता। योजनाएँ जनता तक पहुँचने से पहले ही बीच में ही हड़प की जाती है। इसका यथार्थ चित्रण करते हुए मिश्र जी कहते हैं -

" चन्दनवनों को बन्द कर लिया गया है
संगमरवरी मकानों में

डाल-डाल पर लिपटे साँप हवाओं को
अपने फेफडों में कैद करते रहते हैं"[41]

इसप्रकार अवैध रास्ते से किये जानेवाले अर्थार्जन का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में अधिकतर मिलता है।

3.3.4.4 मानवीय मूल्यों में बिखराव :

समाज में शांति लाने के लिए मानवीय मूल्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उच्च कोटि के मानवीय मूल्य देश को ऊँचे शिखर पर ले जाने में सक्षम होते हैं। रामदरश मिश्र जी ने भी अपने काव्य मे मानवीय मूल्यों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। इसके बारे में वेदप्रकाश अमिताभ कहते है कि - " गत चार दशकों से वे अपनी संवेदनशीलता की जमीन पर मानवीय मूल्यों के सुगंधित फूल उगाते रहे हैं।"[42] किन्तु आज जीवन में अर्थ को प्रधानता दी जाने के कारण वर्तमान समाज में मानवीय मूल्यों को तिलांजलि दी जा रही हैं। भौतिकता की दल-दल में फँसे आदमी को रिश्वतखोरी, गुंडागर्दी, भ्रष्टाचार आदि

समस्याओं ने जकड़ लिया है। इन सारी बातों का चित्रण मिश्र जी के काव्य में मिलता है। इस दृष्टि से उनकी 'साक्षात्कार', 'ग्रीष्म दोपहरी', 'रात और सुबह' तथा गज़ल क्रमांक 25 आदि उल्लेखनीय है। 'लौट आया हूँ मेरे देश' कविता में देश के कर्णधारों ने देश की हालत किसप्रकार बनायी है इसके बारे में मिश्रजी कहते है, -

"तुम्हारी उपजाऊ मिट्टी में
तुम्हारे सपूतों ने बो दिये हैं जहरीले काँटे और पत्थर,
और नालायक बेटे बीच-बीच में
हलों की नोक से उगाते हैं संबंध
मैंने बार-बार केवल जहरीले काँटों और पत्थरों को देखा
उनके बीच-बीच उगते सम्बधों को नहीं
और इसी मिट्टी को कोसता हुआ उससे भागता रहा"[43]

उक्त काव्य पंक्तियों से समाज के कर्णधारों की बदलती मानसिकता का स्पष्ट चित्र सामने आता हैं।

3.3.4.5 रिश्ते-संबंधों में दरार :

मिश्र जी के काव्य में अर्थाभाव के कारण रिश्ते-संबंधों में आये दरार का चित्रण मिलता हैं। उनकी 'दवा की तलाश', 'दस्तक', 'गठरी', 'खो गयी यात्राएँ साथ की' तथा गज़ल क्रमांक 9 इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। 'दवा की तलाश' कविता में रिश्तों में आये बदलाव का चित्रण है। जब कोई आदमी गाँव से शहर चला जाता है तो वहीं की दलदल में फँस जाता है। वह अपने माँ-बाप को भूल जाता है। इसलिए मिश्र जी कहते हैं -

" किसी गली में अपने को फँसा कर
अनेक गलियों को फाँस रहा हूँ

और मन को समझा-बुझा दिया है
कि माँ अब तक तो मर चुकी होगी।"[44]

उक्त पंक्तियों में 'माँ का मरना' प्रतीकात्मक है। यहाँ माँ का मरना रिश्ते संबंधों को खत्म होने जैसा है। इस प्रकार के रिश्ते-संबंधों में दुराव संबंधी चित्रण के अनेक उदाहरण मिश्र जी के काव्य में मिलते हैं।

3.3.4.6 नौकरी की तलाश :

स्वतंत्रता के पश्चात जलद गति से शिक्षा प्रसार होने के कारण समाज में

शिक्षितों की संख्या बढ़ने लगी। युवा वर्ग नौकरी के लिए शहर की ओर बढ़ने लगा। युवा वर्ग की बदलती मानसिकता के कारण शिक्षा का मतलब नौकरी बन गया है। देश की वर्तमान पीढ़ी व्यवसाय से ज्यादा नौकरी को महत्त्व देने लगी है। इसी कारण दिन-ब-दिन बेकारों की संख्या बढ़ती जा रही है। दूसरी ओर खाजगीकरण के कारण खाजगी संस्थाओं पर संस्थापकों का प्रभाव बढ़ता चला जा रहा है। उनकी मनमानी तथा अपना पराया भेदा-भेद के कारण आज की युवा पीढ़ी ग्रस्त हैं। इसी वजह से वह गलत रास्ते की ओर मुड़ रही हैं। मिश्र जी की 'दिशाएँ बन्द है', 'चिट्ठियाँ' तथा गज़ल क्रमांक 44 इस दृष्टि उल्लेखनीय हैं। युवा वर्ग की हताश स्थिति का वर्णन मिश्र जी इन शब्दों में करते हैं -

" धूप जलता हुआ सागर, द्वीप छाँहों के
सरक जाते पिघल कर
मछलियों-जैसे मेरे पल-छिन
उतरा रोज जाते सत्तह पर,
जाल कन्धों पर धरे दिन सुबह आता है
हर शाम खाली लौट जाता है।"[45]

3.3.4.7 देश स्वावलंबन की आस :

आज के वैज्ञानिक युग में हर एक देश अपनी आर्थिक समृध्दि के लिए छटपटाता हैं। हर राष्ट्र अपना प्रभुत्व दूसरे राष्ट्र पर जमाने के लिए लालायित है। यह आन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता सदैव चलती ही रहती है। भारत को भी किसी-न-किसी रूप से अन्य देशों पर निर्भर रहना पड़ता है। लेकिन दुनिया में ऐसा कोई देश नहीं है कि दूसरे देश को पूर्ण रूप से और नि:स्वार्थ भाव से सहायता करता है। सिर्फ नाटकीय रूप से औपचारिकता निभाने का वे कार्य करते हैं। उदाहरण के तोर पर अमरिका को ले सकते हैं। भारत में इ.सन् 1972 के दरमियाँ एक बार अनाज की कमी के कारण अमरिका से गेहूँ मँगवाया गया। उन्होंने ऐसा गेहूँ भेजा कि जो जानवरों के लिए भी खाने लायक नहीं था। वहीं गेहूँ देश की गरीब आम जनता को खाना पड़ा। इसी कारण कवि को लगता है कि हर देश अपने आप में स्वावलंबी और स्वयंपूर्ण होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। मिश्र जी 'साक्षात्कार' कविता में कहते है, -

" अपनी धरती की साँसों को पी लिया है साँपों ने
उसे समुद्रों-पार से ऑक्सीजन दिया जा रहा है

हमारी धूप को लकवा मार गया है
उसके लिए विदेशों में बैसाखियाँ तैयार की जा रही है''[46]

जब किसी देश पर चारो ओर से पाबंदी लगाई जाती तो उस देश की हालत बहुत दुखदाई होती है। इसलिए मिश्र जी अपनी गज़ल में कहते है, -

'' घर के मौसम को हुआ क्या आज है
बन गयी आँगन की चिड़ियाँ बाज है
उधर पूरब की हवा बेचैन है
उधर पश्चिम की हवा नाराज है''[47]

इसप्रकार अन्य कविताओं में भी आन्तर्राष्ट्रीय संबंध सूक्ष्म एक दुसरें पर रौब जमाने की कोशिश का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। इस दृष्टि से उनकी 'फिर वही लोग', 'साक्षात्कार' तथा गज़ल क्रमांक 23 आदि कविताएँ उल्लेखनीय हैं।

निष्कर्षत: रामदरश मिश्र जी के काव्य में स्वातंत्रोत्तर भारतीय परिवेश का सफल चित्रण मिलता है। इस चित्रण में युगीन जीवन के यथार्थ को वाणी देने का कार्य उन्होंने बड़ी खुबी से किया है।

निष्कर्ष :

कवि 'रामदरश मिश्र जी के काव्य में चित्रित युगीन जीवन' के अध्ययन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि स्वतंत्रता के पश्चात देश की परिवर्तित स्थिति का उनके काव्य पर पर्याप्त मात्रा में प्रभाव रहा है। शिक्षा क्षेत्र में प्रगति, वैज्ञानिक उन्नति तथा औद्योगिककरण के कारण देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में पर्याप्त मात्रा में परिवर्तन आया हैं। इन सभी परिवर्तित परिस्थितियों को मिश्र जी ने सूक्ष्मता से यथार्थ रूप में अपने काव्य में अंकित किया है। उन्होंने सामाजिक पक्ष के अंतर्गत स्वतंत्रता के कारण व्यक्ति में अधिकारों के प्रति आयी सज़गता, व्यक्ति स्वातंत्र्य की चेतना, गुलामी के प्रति विद्रोह, समाज में पनपनेवाली सामंती मानसिकता, झूठी शान-शौकत, असंघटितता के कारण समाज की होनेवाली हानी, शोषण, प्रकृति-चित्रण के माध्यम से प्रकृति में आया बदलाव, लोगों का मातृभूमि के प्रति प्रेम, कृषि जीवन, प्रेम की विभिन्न दशाएँ आदि बातों को कवि ने सूक्ष्मता से चित्रित किया हैं। इन सभी बातों से वे अपने काव्य के माध्यम से परिवर्तन लाना चाहते हैं।

रामदरश मिश्र जी ने अपने काव्य में राजनीतिक पक्ष का भी सशक्त रूप से चित्रण किया है। उनके काव्य में स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतीय राजनीति में आये बदलाव, देश में चुनाव की स्थिति, भ्रष्ट राजनीतिज्ञ, राजनीतिक विद्रुपताएँ तथा साहित्यिक राजनीति आदि बातों का सूक्ष्मता से चित्रण मिलता हैं। वर्तमान राजनीति देश के लिए हानीकारक है। मिश्र जी अपने काव्य के माध्यम से वर्तमान राजनीति से सर्तक रहने का संदेश देते है। यहाँ स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक विकृत चेहरे का पर्दाफाश करने में मिश्र जी पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

धार्मिक तथा सांस्कृतिक पक्ष के अंतर्गत कवि ने वर्तमान धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों पर गहरा प्रकाश डाला है। इसके अंतर्गत धर्म के नये मानदंड के प्रति आस्था, धार्मिकता प्रगति में बाधा, सांप्रदायिकता, नई सभ्यता और संस्कृति का उदय तथा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भारतीय संस्कृति आदि बातों का यथार्थ चित्रण मिलता है। उनके काव्य से यह ज्ञात होता है कि उन्हें धर्म में भेदा-भेद मान्य नहीं है। वे समाज में मानव धर्म की स्थापना करना चाहते हैं। उनके काव्य से और एक बात स्पष्ट होती है कि - मिश्र जी भारतीय संस्कृति के आदर्श तत्त्वों में विश्वास रखते हैं। धार्मिक विद्वेष फैलानेवालों के प्रति वे अपने काव्य के द्वारा अक्रोश व्यक्त करते हैं। इस प्रकार उनके काव्य में युगानुरूप धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण मिलता है।

आर्थिक पक्ष देश की सभी परिस्थितियों को प्रभावित करनेवाला पक्ष है। मिश्र जी के काव्य से स्पष्ट होता है कि आज भी अर्थ के धरातल पर आदमी का मूल्यांकन किया जाता है। मजदूरों का यथार्थ जीवन, अर्थ केंद्रित जिंदगी, अर्थ प्राप्ति के लिए अवैध मार्ग का स्वीकार, मानवीय मूल्यों में बिखराव, रिश्ते-संबंधों में दरार, नौकरी की तलाश, देश स्वावलंबन की आस आदि बातों का यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में परिलक्षित होता हैं। उनके काव्य से यह भी स्पष्ट होती है कि उनका मानवीय मूल्यों में विश्वास है। मानवी मूल्य आज भी आम आदमियों में विद्यमान हैं। अत: स्वातत्र्योत्तर बदलती आर्थिक स्थिति का भी यथार्थ चित्रण मिश्र जी के काव्य में प्राप्त होता है। संक्षेप में रामदरश मिश्र जी के काव्य में स्वातंत्रोत्तर भारतीय परिवेश पूर्ण रूप से उभरकर सामने आता है। इस प्रकार युगीन जीवन चित्रण में मिश्र जी को पूर्ण रूप से सफलता मिली है।

संदर्भ -

1. सुमित्रानन्दन पंत, गद्य पथ, पृष्ठ - 205
2. रामदरश मिश्र, आधुनिक हिन्दी साहित्य : सार्वजनात्मक सन्दर्भ, पृष्ठ - 10
3. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 6, पृष्ठ - 12
4. वही, गज़ल क्र. 20, पृष्ठ - 26
5. वही, गज़ल क्र. 7, पृष्ठ - 13
6. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, कलम, पृष्ठ - 67
7. वही, 'फिर वही लोग', पृष्ठ - 104
8. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 1, पृष्ठ - 7
9. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, गलियाँ और सड़के, पृष्ठ - 42
10. वही, जंगल, पृष्ठ - 47
11. डॉ. फूलबदन यादव, रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व और कृतित्व, पृष्ठ - 87
12. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, लौट आया हूँ मेरे देश, पृष्ठ - 60
13. वही, गाढ़े गये दिन बीत, पृष्ठ - 117
14. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 6, पृष्ठ - 12
15. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, फिर वही लोग, पृष्ठ - 104
16. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 30, पृष्ठ - 36
17. डॉ. लाल साहब सिंह, स्वातंत्रोत्तर हिंदी उपन्यासों में युगबोध, पृष्ठ - 33
18. वही, पृष्ठ - 104
19. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधी कविताएँ, फिर वही लोग, पृष्ठ - 96
20. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, गज़ल क्र. 16, पृष्ठ - 22
21. वही, गज़ल क्र. 5, पृष्ठ - 11
22. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, होने, न होने के बीच, पृष्ठ - 35

23. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 4, पृष्ठ - 10
24. डॉ. अर्जुन चव्हाण, उपन्यासकार राजेन्द्र यादव, पृष्ठ - 8
25. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, सेमल, पृष्ठ - 69
26. डॉ. मधु खराटे, साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल, पृष्ठ - 190-191
27. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, धर्म, पृष्ठ - 90
28. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 40, पृष्ठ - 46
29. सं. स्मिता मिश्र, अंतरंग, पृष्ठ - 165
30. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 8, पृष्ठ - 14
31. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, जुलूस, पृष्ठ - 79
32. वही, साक्षात्कार, पृष्ठ - 54
33. सं. अजित गुप्ता, मधुमती - सितम्बर 2007, अंक 9, पृष्ठ - 15
34. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ,आमने सामने मकान, पृष्ठ - 40
35. सं. अजित गुप्ता, मधुमती - सितम्बर 2007, अंक 9, पृष्ठ - 16
36. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 1, पृष्ठ - 7
37. वही, ग़ज़ल क्र. 14, पृष्ठ - 20
38. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, फरवरी, पृष्ठ - 85
39. वही, हम पूरब से आये है, पृष्ठ - 110-111
40. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग, ग़ज़ल क्र. 41, पृष्ठ - 47
41. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, साक्षात्कार, पृष्ठ - 50
42. वेदप्रकाश अमिताभ, रामदरश मिश्र : रचना समय, पृष्ठ - 19
43. सं. रघुवीर चौधरी, रामदरश मिश्र की प्रतिनिधि कविताएँ, लौट आया हूँ मेरे देश, पृष्ठ - 62-63
44. वही, दवा की तलाश, पृष्ठ - 50
45. वही, दिशाएँ बन्द हैं, पृष्ठ - 45
46. वही, साक्षात्कार, पृष्ठ - 52
47. रामदरश मिश्र, बाजार को निकले हैं लोग ग़ज़ल क्र. 23, पृष्ठ - 29.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.